राग श्री
तीन विध का चलना

ए जो कही जागन, सखी री जाग चलो।। टेक ।।

वचन नीके विचारियो, जो कोई सोहागिन।
जाग चलो पिउसों मिलो, सुख अखण्ड आनन्द अति घन।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत होकर चलो। जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो वह इसे अच्छी तरह से विचार करे कि हमको जागृत होकर धनी से मिलना है और बेशुमार अखण्ड सुखों को प्राप्त करना है।

जाग्रत सब्द धनीय के, ततखिन करें मकसूद।
सोई सब्द लिए बिना, होए जात नाबूद।। २ ।।

धनी की जागृत बुद्धि की वाणी तुरन्त ही मन की इच्छाओं की पूर्ति करती है। इस वाणी के बिना सब मिटे जा रहे हैं।

कई किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन।
इनमें से मैं मेरे सिर, लिया ना एक वचन।। ३ ।।

मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते कई ग्रन्थों के सार बताए, प्रमाण दिये, परन्तु इनमें से मैंने एक वचन भी अमल में नहीं लिया।

ए जो जाग्रत वचन, सुपन रहे ना आगूं जाग।
पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग।। ४ ।।

इस जागृत वाणी के सामने सपने की वाणी नहीं टिकेगी, परन्तु मैंने जागृत वाणी को अमल में नहीं लिया, इसलिए सपने के तन में बैठी हूं।

अबहीं जो सिर लीजिए, एक वचन जाग्रत।
तो तबहीं जाग के बैठिए, उड़ जाए सुपन सुरत।। ५ ।।

अब भी यदि इस जागृत वाणी का एक भी शब्द अमल में ले लें, तो तुरन्त ही परमधाम में जग जाएंगे और यह सपने का तन उड़ जाएगा।

ए वचन ऐसे जाग्रत, जगावत ततखिन।
जो न लीजे सिर अपने, तो कहा करे वचन।। ६ ।।

यह वचन तो ऐसे जागृत हैं कि तुरन्त ही माया का परदा हटाकर जगा देते हैं पर जो वाणी को अमल में न ले तो वाणी क्या करे (वाणी का क्या दोष)?

मैं न लिया सिर अपने, तो कहा देऊं दोष औरन।
जागे सुपना क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन।। ७ ।।

जब मैंने ही वाणी पर अमल नहीं किया तो दूसरों को क्या दोष दूं? जागृत होने पर सपने का तन रह नहीं सकता, परन्तु यह धनी के हुकम के अनुसार खड़ा है।

जाग्रत वचन अनुभवें, अखंड घर वतन।
अचरज बड़ो होत है, देह उड़त ना झूठ सुपन।। ८ ।।

जागृत बुद्धि से अखण्ड घर (परमधाम) का अनुभव होता है। मुझे बड़ी हैरानी हो रही है कि यह मेरा स्वप्न का तन क्यों नहीं छूटता?

Nijanand App

साख देवाई सब अंगों, दया और अंकूर।
अनुभव वतनी होत है, देह होत न झूठी दूर।। ९ ।।

धनी ने इस वाणी से मेरे अन्दर सभी अंगों से साक्षी दिलवाई, अर्थात् मेरे अंगों ने स्वीकार किया। मुझे घर का अनुभव होने लगा। श्री राजजी की कृपा और अंकूर भी है। फिर भी यह झूठा तन नहीं छूट रहा है।

मैं बिध बिध करके वचनों, मारे तरवारों घाए।
टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उड़त नहीं अरवाहे।। १० ।।

मैंने खण्डनी के जागृत वचन सुन्दरसाथ को कह-कहकर तलवारों जैसे घाव मारे जो अंग के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं फिर भी अरवाहें उड़ती नहीं।

सब्द बान सतगुर के, रोम रोम निकसे फूट।
बड़ा अचंभा होत है, देह जात न झूठी टूट।। ११ ।।

सतगुरु की वाणी के शब्द मेरे रोम-रोम में चुभ रहे हैं। फिर भी यह हैरानी की बात है कि यह झूठा तन मिटता क्यों नहीं?

मैं जान्या अपने तन को, मारों भर भर बान।
तिनसे झूठी देह को, फना करों निदान।। १२ ।।

मैंने समझा था कि मैं वाणी के बाणों से अपने तन को छेदूंगी और इस झूठे तन को निश्चित ही समाप्त कर दूंगी।

ए सब्द धनी फुरमान के, भी ले अनुभव आतम।
तिनसे उड़ाऊं सुपना, पर कोई साइत हाथ हुकम।। १३ ।।

इस जागृत वाणी के शब्द श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के हैं और कुरान में भी लिखे हैं। मेरी आत्मा इसका अनुभव कर इस झूठे तन को उड़ाना चाहती थी, परन्तु यह घड़ी धनी के हुकम के हाथ में है।

अब तो आतम ने ए दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इस्क।
जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक।। १४ ।।

अब आत्मा में यह निश्चय हो गया है कि बिना इश्क के यह तन नहीं छूटेगा। धनी का जोश और इश्क दोनों जब मिल जाएंगे तभी यह तन छूटेगा।

दुख ना दीजे देह को, सुखे छोड़िए सरीर।
ए सिध इन विध होवही, जो जोस इस्क करे भीर।। १५ ।।

इसलिए शरीर को कष्ट मत दो। जब तक जोश और इश्क दोनों मिलकर जोर नहीं लगाएंगे, तब तक सपने का तन नहीं छूटेगा और इसलिए श्री राजजी के जोश और इश्क को पाकर ही सुख से शरीर छोड़ो।

अब दौड़े जोस इस्क को, याद कर साथ धनी धाम।
ए धनी बिना ना आवहीं, जोस इस्क प्रेम काम।। १६ ।।

अब सुन्दरसाथ धनी को याद करके जोश और इश्क के वास्ते दौड़ेगा। यह धनी के बिना नहीं मिलेगा। धनी से ही जोश, इश्क, प्रेम और आनन्द प्राप्त होगा।

Nijanand App

तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन।
वचन अनुभव इस्क, हुआ जाहेर आकीन।। १७ ।।

सात्विक, राजस और तामस तीनों गुणों में आत्माएं हैं। इनके वचनों के अनुभव और इश्क से उनके यकीन की जाहिरी पहचान होती है।

हंसे खेले बिध तीन में, छोड़ें देह सुपन।
महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन।। १८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हंसते-खेलते तीनों तरह से अपने शरीर से धनी से मिलने और अखण्ड सुख को प्राप्त करने के लिए तीन तरह से शरीर छोड़ेगी।

।। प्रकरण ।। ८५ ।। चौपाई ।। ११९४ ।।

राग श्री

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आखिरत की इस वाणी को सुनकर जागृत हो जाओ और (जोश और इश्क के) अस्त्रों से सजो और दौड़कर अपने घर परमधाम में अपने धनी से मिलो।

धनी के केहेलाए मैं कहे, तुमको चार सब्द।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद।। २ ।।

धनी के हुकम से ही मैंने तुमको चार वचन जागृत होने के लिए कहे। इन्हें किसी ने ज्यादा और किसी ने कम लिया। किसी ने तो ग्रहण ही नहीं किए।

किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार।
साथ जी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार।। ३ ।।

किसी ने कम और किसी ने ज्यादा लेकर बाजी जीती और कोई हाथ पटकते ही रह गए। हे सुन्दरसाथजी! इस खेल की बाजी में कोई (ब्रह्मसृष्टि) ही बेशुमार जीती।

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर।
धनिएं बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर।। ४ ।।

अब वह समय आ गया है जब मुझे धनी के वचनों को सिर चढ़ाना है। धनी ने वाणी कर्ता मुझे बनाया, तो इससे मैं पीछे कैसे हट सकती हूं?

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएं केहेलाए साथ कारन।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! कोई लेना चाहो तो ले लो। धनी ने सुन्दरसाथ के वास्ते ही यह वाणी कहलवाई है। नहीं तो मुझे अवश्य अमल में लेना है क्योंकि यह वाणी ही घर (परमधाम) की ताकत है।

ए नीके मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान।
तुममें विरला कोई पीछे पड़े, आखिर ल्योगे सिर निदान।। ६ ।।

यह मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुमको वाणी की पहचान अच्छी तरह से है। तुममें से शायद ही कोई पीछे रहेगा, क्योंकि अन्त में घर जाने के लिए इसे लेना ही पड़ेगा।

Nijanand App